

भारतीय वाणिज्यिक बैंकों की लाभप्रदता पर ध्वनि संकेतकों के प्रभाव को कूटानुवाद करना

Decoding the Impact of Soundness Indicators on the Profitability of Indian Commercial Banks

अमिता अरोड़ा¹ एवं सिनु²

Amita Arora¹ and Sinu²

^{1,2}Faculty of Commerce and Management, SGT University, Gurugram, Haryana

¹amita_fcam@sgtuniversity.org, ²katariasinu45@gmail.com

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18599063>

सारांश

लाभप्रदता, परिचालन और निवेश से आय उत्पन्न करने की बैंक की क्षमता की एक महत्वपूर्ण माप है, जो दीर्घकालिक व्यवहार्यता और विकास को सुनिश्चित करता है। सुदृढ़ता संकेतक बैंक की समग्र सुदृढ़ता और मजबूती के बारे में उपयोगी जानकारी देते हैं। इस शोध पत्र का लक्ष्य भारतीय वाणिज्यिक बैंकों की लाभप्रदता पर सुदृढ़ता उपायों के प्रभाव को समझना है। अध्ययन का प्राथमिक जोर वाणिज्यिक बैंकों पर है; आंकड़ों को माध्यमिक स्रोतों जैसे कि RBI प्रकाशनों और 2019 से 2023 तक वाणिज्यिक बैंकों की वार्षिक रिपोर्ट से एकत्र किया गया था। अध्ययन चार चयनित वाणिज्यिक बैंकों पर केंद्रित है, जिसमें दो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (PSB) - भारतीय स्टेट बैंक (SBI) और बैंक ऑफ बड़ौदा (BOB), और दो निजी क्षेत्र के बैंक - HDFC बैंक और ICICI बैंक शामिल हैं। पैनल आंकड़ा विश्लेषण का उपयोग विशेष रूप से पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर), चालू खाता बचत खाता जमा (सीएएसए), कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर), और ऋण-जमा अनुपात (एलटीडी) के स्वतंत्र चरों के रूप में लाभप्रदता (आरओए) पर आश्रित चर के रूप में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया गया था। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि स्वतंत्र कारकों का आश्रित चरों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

Abstract

Profitability is a vital measure of a bank's capacity to produce earnings from operations and investments, assuring long-term viability and development. Soundness indicators give useful insights into a bank's overall soundness and robustness. The goal of this paper is to decipher the influence of soundness measures on the profitability of Indian commercial banks. The primary emphasis of the study is on commercial banks; data was gathered from secondary sources such as RBI publications and annual reports of commercial banks from 2019 to 2023. The study focuses on four selected Commercial Banks, comprising two Public Sector Banks (PSBs) - State Bank of India (SBI) and Bank of Baroda (BOB), and two Private Sector Banks - HDFC Bank and ICICI Bank. The Data is analysed by the use of Averages, Standard Deviation, Ratios, and a Panel Data Model. Panel data analysis was specifically applied to study the impact of Capital Adequacy Ratio (CAR), Current Account Saving Accounts Deposits (CASA), Corporate Social Responsibility (CSR), and Loan to Deposit Ratio (LTD) as independent variables on Profitability (ROA) as the dependent variable. The study's result reveals that the independent factors have a considerable impact on the dependent variables.

मुख्य शब्द: सुदृढ़ता संकेतक, लाभप्रदता, वाणिज्यिक बैंक, वित्तीय स्वास्थ्य।

Key Words: Soundness Indicators, Profitability, Commercial Banks, Financial Health.

परिचय

बैंक महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थान हैं, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। वे आर्थिक गतिविधियों, संचयी निवेश और सार्वजनिक बचत को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम हैं। बैंकिंग क्षेत्र का अच्छा प्रदर्शन समग्र आर्थिक सफलता को बढ़ाता है क्योंकि यह ऋण आवंटन और बचत का प्रमुख साधन है।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय बैंकिंग प्रणाली में काम करने वाले वाणिज्यिक बैंकों का वित्तीय प्रदर्शन, लेखांकन अनुपात और संचालन है। बैंकिंग प्रणाली का प्रदर्शन लोगों के विश्वास, प्रतिष्ठा और लाभ पर निर्भर करता है। संपत्ति पर प्रतिफल (आरओए), जो बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य का एक संकेत है, बैंक की लाभप्रदता का एक महत्वपूर्ण कारक है; उच्च आरओए वाले बैंकों की संपत्ति का उपयोग और लाभप्रदता बेहतर होते हैं पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर), चालू खाता बचत खाता जमा (सीएएसए), कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएआर) और जमा अनुपात पर ऋण आरओए को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण आंतरिक कारक हैं। बैंकों की लाभप्रदता बाहरी कारकों से भी प्रभावित होती है, जैसे मौद्रिक नीति, तकनीकी नवाचार, विनिमय दर में अस्थिरता और बैंकों के बीच प्रतिद्वंद्विता। यह अध्ययन कई प्रदर्शन आव्यूह का उपयोग करके सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में बैंकों की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण करता है। इसके अलावा, सतत विकास और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के मुद्दों पर वैश्विक स्तर पर चर्चा हो रही है, जो नैतिक बैंकिंग प्रथाओं की जरूरत पर बल देता है। बेसल III, एक महत्वपूर्ण नियामक ढांचा, दिसंबर 2010 से धीरे-धीरे लागू होने लगा है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 31 मार्च 2019 तक बेसल III नियमों को देश भर में लागू करना अनिवार्य है। बेसल III ने

वैश्विक बैंकिंग प्रणाली को अधिक लचीला बनाया है, जिसमें अधिक पूंजी आवश्यकताओं, सुधारित तरलता नियमों और सुधारित जोखिम प्रबंधन तकनीकें शामिल हैं। योजना तरलता जोखिम के प्रबंधन पर बहुत जोर देती है, जो बैंकों को बाजार में होने वाले बदलावों से ठीक से निपटने के लिए पर्याप्त तरलता बफर रखने की आवश्यकता बताती है। भारत के बैंकों ने तरलता प्रबंधन के लिए अपने ढांचे को मजबूत किया है, जिससे वित्तीय प्रणाली को तरलता संकट से कम संवेदनशीलता मिलेगी। यह ढांचा बेसल III आवश्यकताओं को पूरा करेगा। कुल मिलाकर, बेसल III की शुरुआत वित्तीय स्थिरता, उन्नत जोखिम प्रबंधन तकनीकों और अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करने की प्रतिबद्धता को दिखाती है। भारतीय बैंक कुछ नियमों का पालन करके निवेशकों का विश्वास बढ़ा सकते हैं, बाधाओं को दूर कर सकते हैं और देश की निरंतर आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं।

चुने गए चार वाणिज्यिक बैंकों को विश्लेषण का विषय बनाया गया है: दो निजी क्षेत्र (एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक) और दो सार्वजनिक क्षेत्र (पीएसबी) बैंक हैं: भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और बड़ौदा बैंक (बीओबी)।

योजना तरलता जोखिम प्रबंधन पर बहुत जोर देती है, जो बैंकों को बाजार में होने वाले बदलावों से ठीक से निपटने के लिए पर्याप्त तरलता बफर रखने की जरूरत बताती है। भारत के बैंकों ने तरलता प्रबंधन के लिए अपने ढांचे को मजबूत किया है, जो वित्तीय प्रणाली को तरलता संकट से कम संवेदनशील बना देगा। यह संरचना बेसल III की मांगों को पूरा करेगी। कुल मिलाकर, बेसल III की शुरुआत वित्तीय स्थिरता, उन्नत जोखिम प्रबंधन तकनीकों और विश्वव्यापी नियमों का पालन करने की प्रतिबद्धता को दिखाती है। नियमों का पालन करने से भारत के बैंक निवेशकों का विश्वास बढ़ा

सकते हैं, बाधाओं को दूर कर सकते हैं और देश की निरंतर आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दे सकते हैं। अब मुंबई में स्थित एचडीएफसी बैंक देश का सबसे बड़ा निजी बैंक है। ठीक उसी तरह, 1994 में स्थापित भारतीय औद्योगिक ऋण और निवेश निगम (आईसीआईसीआई) की सहायक कंपनी आईसीआईसीआई बैंक आज निजी क्षेत्र में शीर्ष बैंकों में से एक है। आईसीआईसीआई बैंक ने शुरू में कॉर्पोरेट बैंकिंग और परियोजना वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित करने के बाद खुदरा और एसएमई बैंकिंग को भी अपनी पेशकशों में शामिल किया है। 2002 में, ICICI बैंक ने न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज (NYSE) में सूचीबद्ध होने वाला पहला भारतीय बैंक बनकर इतिहास रचा।

अनुसंधान अन्तराल

यह अध्ययन सार्वजनिक और निजी बैंकों में लाभप्रदता और सुदृढ़ता आव्यूह के बीच संबंध की जांच करता है, जो अक्सर अलग-अलग होते हैं। यद्यपि केवल सार्वजनिक और निजी बैंकों के बीच भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित करना फायदेमंद है, एक संयुक्त परीक्षा एक अधिक विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान करती है। शोध पत्र के अनुसार सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के संस्थानों की संयुक्त परीक्षा का मूल्यांकन वाणिज्यिक बैंकों से किया गया था।

अनुसंधान क्रियाविधि

2019 से 2023 तक भारत के दो सार्वजनिक (एसबीआई और बीओबी) और दो निजी (एचडीएफसी और आईसीआईसीआई) वाणिज्यिक बैंकों की जांच उनकी औसत सकल संपत्ति के आधार पर करता है। द्वितीयक आंकड़ों के लिए वाणिज्यिक बैंकों की वार्षिक रिपोर्ट, आरबीआई प्रकाशनों और बेसल II और III प्रकटीकरणों का उपयोग किया गया। रुझानों और लाभप्रदता अनुपातों को पता लगाने के लिए पैनेल आंकड़ा विश्लेषण, मानक विचलन और माध्य जैसे सांख्यिकीय मापों का उपयोग किया गया। मुख्य रूप से पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर), चालू खाता बचत खाता जमा (सीएसए), ऋण से जमा अनुपात (एलटीडी) और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के आश्रित चर (आरओए) पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया। सांख्यिकीय गणना के लिए STATA 18 और Microsoft Excel का उपयोग किया गया।

आंकड़ों की व्याख्या

यह खंड बैंकों की लाभप्रदता (आरओए) (आश्रित चर) के साथ ध्वनि संकेतक (सीएआर, सीएसए, सीएसआर, एलटीडी) के संबंध को प्रकट करता है। विश्लेषण भारतीय वाणिज्यिक बैंकों (सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों) के लिए किया गया है।

तालिका 1. चर के लिए वर्णनात्मक आंकड़े

Variables	OBS	Mean	Std . Dev	Min	Max
CAR	20	16.2055	2.351672	12.72	19.26
CASA	20	43.631	3.930005	35.03	49.61
CSR	20	0.176543	0.3730069	0.0001	1.517
LTD	20	0.16125	0.1981748	0.064	0.979
ROA	20	0.941	0.7067412	0.02	2.01

तालिका 1 में बैंकों के महत्वपूर्ण वित्तीय संकेतकों की सूची है। औसत पूंजी पर्याप्तता अनुपात 16.2055% है, जो कम से कम मध्यम फैलाव के साथ एक स्वस्थ पूंजी बफर को दिखाता है (मानक विचलन 2.351672)। रूढ़िवादी बैंकों ने स्थिर प्रतिफल की पेशकश की है। वर्तमान खाता बचत खाते अनुपात, औसत 43.631%, एक मजबूत जमा आधार को दिखाता है, जो बैंकों के लिए आम तौर पर सस्ता है और मध्यम फैलाव के साथ है (मानक विचलन, 3.930005)। सस्ते धन और संभावित उच्च लाभप्रदता (ROA) का संकेत एक उच्च सीएएसए अनुपात है। विभिन्न बैंक निवेशों में औसत 0.176543% कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) खर्च है, जिनमें समान रणनीति और व्यापक फैलाव नहीं है। जमा करने के लिए ऋण (एलटीडी) अनुपात, औसत 0.16125, रूढ़िवादी उधार प्रथाओं को दिखाता है, जो संभावित तरलता लेकिन कम लाभप्रदता देते हैं। इसके विपरीत, एक उच्च एलटीडी अनुपात उच्च जोखिम और संभावित रूप से उच्च रिटर्न का संकेत देता है, जो बैंकों की लाभप्रदता और जोखिम प्रबंधन में कठिन प्रक्रियाओं को दिखाता है।

तालिका 2. सहसंबंध आव्यूह सहसंबंध

	CAR	CASA	CSR	LTD	ROA
CAR	0.3617	1			
CASA	0.1408	0.4956	1		
CSR	0.1449	-0.1087	-0.2923		
LTD	-0.1646	0.0521	0.1614	1	
ROA	0.4573	0.8802	0.4379	-0.0352	1

तालिका 2 में सीएआर, सीएएसए, सीएसआर, एलटीडी और आरओए के युग्म सहसंबंध गुणांक दिखाए गए हैं। सस्ते जमा सीएएसए और अच्छी तरह से पूंजीकृत बैंक सकारात्मक सहसंबंधों से अधिक लाभदायक हैं। ज्यादा सीएएसए जमा वाले बैंकों को विशेष लाभ मिलता है, क्योंकि यह एक बहुत मजबूत लाभदायक सहयोग है। वृद्धि हुई ब्रांड छवि और ग्राहक वफादारी के कारण सीएसआर निवेश उच्च लाभप्रदता का कारण बन सकता है, जैसा कि एक मध्यम सकारात्मक सहसंबंध बताता है। ऋण-से-जमा अनुपात का कमजोर नकारात्मक सहसंबंध लाभप्रदता पर सीधा प्रभाव नहीं डालता है। विभिन्न उधार योजनाओं का उपयोग करते हुए भी बैंक अभी भी समान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सीएआर और सीएएसए के बीच मध्यम सकारात्मक सहसंबंध से पता चलता है कि मजबूत पूंजी आधार वाले बैंकों में वर्तमान और बचत खातों का एक उच्च अनुपात भी है, जो स्थिरता और कम लागत वाली फंडिंग के लिए फायदेमंद हो सकता है। सीएसआर और एलटीडी के बीच कमजोर सकारात्मक संबंध से पता चलता है कि अधिक संलग्न सीएसआर बैंक शायद उच्च उधार जोखिम ले सकते हैं। उच्च पूंजी वाले बैंकों में कम ऋण-से-जमा अनुपात है, जो कमजोर नकारात्मक सहसंबंध दिखाता है। ये सहसंबंध बैंक की लाभप्रदता और जोखिम प्रबंधन को प्रभावित करने वाली बहुमुखी गतिशीलता को दिखाते हैं।

तालिका 3 . वाणिज्यिक बैंकों के बहुसंस्कृति सांख्यिकी

Variable	VIF
CAR	1.48
LTD	1.33
CSR	1.11
CASA	1.04
Mean VIF = 1.24	

वीआईएफ मानों को तालिका 3 के नीचे दिखाया गया है, जो स्वतंत्र चर के बीच कोई समस्याग्रस्त बहुस्तरीयता की पुष्टि करता है। कुल मिलाकर, कम वीआईएफ मान, औसत वीआईएफ 1.24 के साथ, भविष्यवाणियों के बीच न्यूनतम सहसंबंध का संकेत देते हैं। हौसमैन के विनिर्देश परीक्षण के अनुसार, वाणिज्यिक बैंकों के लिए यादृच्छिक-प्रभाव प्रतिगमन मॉडल उपयुक्त है, क्योंकि इसमें एक नकारात्मक मूल्य की उपज है। परिणाम, 5.15 और 4 डिग्री की स्वतंत्रता के सांख्यिकीय हौसमैन परीक्षण के साथ, यादृच्छिक प्रभाव मॉडल की उपयुक्तता का संकेत देता है, 0.05 का सामान्य महत्व स्तर मानता है।

तालिका 4. यादृच्छिक-प्रभाव प्रतिगमन परिणाम

R-squared:	Number of obs = 20					
Within = 0.5695	Number of groups = 4					
Between = 0.9359	Wald Chi Square (4) = 68.89					
Overall = 0.8212	Prob. > Chi Square = 0.0162					
Coefficient		Std . Error	z	P>z	(95% confidence interval)	
CAR	0.2665591	0.0378399	7.04	0	0.1923942	0.340724
CASA	-0.0095597	0.0239175	0.4	0.689	0.0564371	0.0373177
CSR	-0.3970197	0.2179259	1.82	0.068	-0.8241465	0.0301072
LTD	-0.2161906	0.3973033	0.54	0.586	-0.9948908	0.5625096
_Cons (Intercept)	-2.856672	0.923656	3.09	0.002	-4.667005	-1.04634

जैसा कि प्रतिगमन मॉडल का समग्र सांख्यिकीय महत्व (Prob. > Chi Square = 0.0162), स्वतंत्र चर के सेट का सामूहिक रूप से आश्रित चर पर काफी प्रभाव पड़ता है। R-squared मान बताते हैं कि आश्रित चर में मॉडल समूहों के भीतर और बाहर पर्याप्त परिवर्तनशीलता है। 5% स्तर पर आश्रित चर से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध का एकमात्र स्वतंत्र चर है। यह कार आश्रित चर में वृद्धि से जुड़ा हुआ है, जो इस मॉडल में अच्छी तरह से पूंजीकृत बैंकों को बेहतर बनाता है। सीएसए, सीएसआर और एलटीडी आश्रित चरों के साथ 5% स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं दिखाते हैं। जबकि सीएसआर 10% के स्तर पर मामूली रूप से महत्वपूर्ण है, एक संभावित नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है, पारंपरिक 5% महत्व स्तर पर इस संबंध की पुष्टि करने के लिए सबूत पर्याप्त मजबूत नहीं है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के भारतीय वाणिज्यिक बैंकों के वित्तीय प्रदर्शन की व्यापक तुलना करता है। प्रमुख वित्तीय अनुपातों में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर), दीर्घकालिक ऋण (एलटीडी), पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर), चालू और बचत खाता अनुपात (सीएएसए) और संपत्ति पर प्रतिफल (आरओए) शामिल हैं। वर्णनात्मक आंकड़ें अच्छी वित्तीय स्थिति का संकेत करते हैं। सहसंबंधों (जैसे सीएएसए और आरओए) के प्रत्यक्ष प्रभाव हैं, जबकि अन्य बैंक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले घटकों के बीच जटिल बातचीत का सुझाव दिया जाता है। प्रतिगमन मॉडल में एकमात्र चर (पी-मान = 0.162) सीएआर का आरओए के साथ सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है। 5 से कम वीआईएफ मान किसी बहुसंरेखता की चिंता नहीं दिखाते, जिससे प्रतिगमन गुणांक की व्याख्या विश्वसनीय होती है। 5.15 हौसमैन परीक्षण परिणामों और 4 डिग्री स्वतंत्रता परीक्षण आंकड़े के साथ, यादृच्छिक प्रभाव मॉडल की उपयुक्तता का समर्थन करते हैं। निष्कर्षों ने आरओए निर्धारक के रूप में सीएआर की महत्वपूर्ण भूमिका को दिखाया, जो उच्च आर-वर्ग मान मॉडल की पर्याप्त व्याख्यात्मक क्षमता को दिखाता है। अध्ययन से पता चला कि बीओबी का संपत्ति पर रिटर्न (आरओए) अधिक था। एचडीएफसी बैंक का शुद्ध व्याज मार्जिन बीओबी, आईसीआईसीआई और एसबीआई से कम था। एचडीएफसी में अधिक पूंजी जमा अनुपात (सीडीआर) था, जो अधिक लाभ वृद्धि क्षमता का संकेत देता है। बीओबी और आईसीआईसीआई बैंकों में जमा अनुपात कम था।

यह व्यापक विश्लेषण वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों में बैंक की स्थिति को प्रभावित करने वाले कई कारकों पर प्रकाश डालता है। कुल मॉडल फिट में उच्च आर-वर्ग मान हैं, जो आश्रित चर में बहुत सी परिवर्तनशीलता का संकेत देते हैं।

सीमा और भविष्य का दायरा

इस अध्ययन में केवल चार निजी और सार्वजनिक बैंक शामिल हैं। 2019 से 2023 तक अध्ययन की पांच वर्ष की अवधि में एक अतिरिक्त बाधा है। अनुदैर्ध्य अध्ययन में बड़े नमूना आकार उपयुक्त हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय बैंकों और स्वतंत्र व आश्रित चरों के लिए भी आगे अध्ययन किये जाने की संभावनाएं हैं।

संदर्भ

1. Annual reports of SBI, BOB, HDFC and ICICI for the period (2019-2023).
2. Budhedeo, S. H. (2018). Performance analysis of commercial bank Groups in India. *International Journal of Management Studies*, 5(4), 1.
3. Chadha, N. (2017). A comparative study of operational effectiveness of public and private sector banks. *International Journal of Business Administration and Management*, 7(1), 103-117.
4. Goel, C., & Rekhi, C. B. (2013). A comparative study on the performance of selected public sector and private sector banks in India. *Journal of business management & Social sciences research*, 2(7), 46-56.

5. G, Y., & Çelikkol, H. (2011). Data envelopment analysis: An augmented method for the analysis of firm performance. *International research journal of finance and economics*, 79, 137-142.
6. Guruswamy, D. (2012). Profitability performance of SBI and its associates. *Zenith International Journal of Business Economics and Management Research*, 2(1), 105125.
7. Innocent, I. O., Ademola, O. G., & Teryima, T. S. (2019). Effect of Capital Adequacy, Credit Risk and Operating Efficiency on the performance of Commercial Banks in Nigeria.
8. Jaiswal, A., & Jain, C. (2016). A comparative study of financial performance of SBI and ICICI banks in India. *International Journal of Scientific Research in Computer Science and Engineering*, 4(3), 1-6.
9. Jelsy, J., & Vetrivel, A. (2012). Time driven activity based costing for spinning mills to improve financial performance. *Advances in Management Accounting*, 5(3), 40-45.
10. Jha, S., & Hui, X. (2012). A comparison of financial performance of commercial banks: A case study of Nepal. *African Journal of Business Management*, 6(25), 7601.
11. Kohli, H. K. Risk management practices a comparative study of public and private sector banks.
12. Kumari, N., Sharma, R., Mohan, A., Geyi, N., Dwivedi, S., & Srivastav, A. (2023). A Comparative Evaluation Of Financial Performance Of Public Sector Banks And Private Sector Banks In India. *Onomázein*, (62 (2023): December), 1320-1333.
13. Palamalai, S., & Britto, J. (2017). Analysis of financial performance of selected commercial banks in India. Srinivasan, Palamalai and Britto, John (2017), "Analysis of Financial Performance of Selected Commercial Banks in India", *Theoretical Economics Letters*, 7(7), 2134-2151.
14. Ramzan, M., Amin, M., & Abbas, M. (2021). How does corporate social responsibility affect financial performance, financial stability, and financial inclusion in the banking sector? Evidence from Pakistan. *Research in International Business and Finance*, 55, 101314.
15. Singh, A. B., & Tandon, P. (2012). A study of financial performance: A comparative analysis of SBI and ICICI Bank. *International Journal of Marketing, Financial Services & Management Research*, 1(11), 56-71.

□